

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा जानना, सत्र 12, पवित्र आत्मा की भूमिका

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

हमारे 12वें व्याख्यान में आपका स्वागत है। यह GM 12 है, और आपको इस बार अपने नोट्स अपने सामने रखने की ज़रूरत है क्योंकि स्लाइड कम हैं, और हम नोट्स से ज़्यादा जुड़े हुए हैं। मेरे पास कुछ हैं, और मेरे लिए यह ज़रूरी है कि मेरे पास कुछ कथन हों जो कभी-कभी स्लाइड के साथ दिए जाने वाले कथनों से थोड़े ज़्यादा विस्तृत हों।

ठीक है, अब, अगर आपको अपनी विषय-सूची याद है, तो हम व्यक्तिपरक चुनौतियों में हैं। हमने विवेक के बारे में बात की। विवेक हमारे विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों का साक्षी है।

ठीक है, अब हम पवित्र आत्मा की भूमिका के बारे में बात करने जा रहे हैं। बेशक, यह एक बहुत ही विवादास्पद क्षेत्र हो सकता है। मैं यहाँ सभी अलग-अलग दृष्टिकोणों को शामिल नहीं करने जा रहा हूँ।

मैं आपको एक दृष्टिकोण देने जा रहा हूँ कि मैं पवित्र आत्मा को बाइबल के न्याय-निर्णय के प्रश्न से कैसे जोड़ता हूँ और इसे कैसे व्याख्यायित किया जाए, इस पर मैं किस तरह से विचार करता हूँ। ये मेरे अपने अच्छे विचार नहीं हैं। वास्तव में, बहुत कम चीज़ें मेरे अच्छे विचार हैं।

वे शोध का परिणाम हैं। मैं हैंडआउट में कुछ ग्रंथसूची का उल्लेख करूँगा। मैं वास्तव में आपको थोड़ी और ग्रंथसूची देता हूँ।

मुझे नहीं लगता, आपको कुछ चीज़ें पुनः प्राप्त करने में परेशानी हो सकती है। बाइबिल ई-लर्निंग गुरु, डॉ. हिल्डेब्रांड, पाठों के अंत में एक ग्रंथसूची डालते हैं जब कॉपीराइट कोई समस्या नहीं होती है। और हम पाते हैं कि ये मुद्दे अधिक से अधिक समस्या बन रहे हैं।

इसलिए, हम हमेशा वहाँ चीज़ें नहीं रख सकते। लेकिन अगर आपके पास इसे खोजने का कोई तरीका है, तो आप और भी कुछ पढ़ सकते हैं। ठीक है।

तो यह पाठ 12 है, जी.एम. 12. और यहाँ हम पवित्र आत्मा के इस प्रश्न के बारे में बात कर रहे हैं। यह न्यूमेटोलॉजी, न्यूमा, निश्चित रूप से, हवा और सांस के लिए शब्द है, और यह आत्मा के लिए एक संज्ञा बन जाता है।

परमेश्वर की पवित्र आत्मा, त्रिदेवों में तीसरा व्यक्ति। त्रिदेवों के बारे में मैं जो कहना चाहता हूँ, उनमें से एक बात यह है कि त्रिदेवों में ईर्ष्या नहीं है। आपके पास पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा हैं।

प्रत्येक को पवित्रशास्त्र में विभिन्न तरीकों से चित्रित किया गया है। और अगर हम दूसरों को छोड़कर किसी एक को देखें, तो हम गलत दिशा में जा रहे हैं। लेकिन वे खुद को चित्रित करते हैं।

पिता, निश्चित रूप से, खुद को पिता शब्द की तरह ही चित्रित करता है। और परमेश्वर का पुत्र, यीशु, त्रिदेव का दूसरा व्यक्ति है और उसकी अपनी भूमिका है। और त्रिदेव का तीसरा व्यक्ति, वह एक तरह से अनुप्रयोग पहलू है।

और हम आज कई ग्रंथों में इसका उल्लेख करेंगे। तो, आत्मा और मार्गदर्शन चर्च युग के दौरान थे। आपके पास जो पृष्ठ एक है।

हम सारांश कथन से शुरू करने जा रहे हैं। फिर, हम आत्मा धर्मशास्त्र के इतिहास को देखने जा रहे हैं। हम आज कई ग्रंथों को देखने जा रहे हैं और वे मार्गदर्शन से कैसे संबंधित हैं।

मैं आम तौर पर आपको लंबे उद्धरण नहीं देता, लेकिन क्योंकि हम कॉपीराइट कानूनों के कारण इन लेखों को पाठों में नहीं डाल सकते, इसलिए मैं आपको सामान्य से थोड़ा लंबा उद्धरण देना चाहता हूँ। जॉन मुरे की पुस्तकों का एक सेट है। जॉन मुरे प्रिंसटन सेमिनरी में प्रोफेसर थे जब प्रिंसटन सेमिनरी एक बहुत ही रूढ़िवादी ईसाई सेमिनरी थी।

इनमें से कई ने प्रिंसटन छोड़ दिया। वारफील्ड भी उनमें से एक था। उन्होंने फिलाडेल्फिया में वेस्टमिंस्टर थियोलॉजिकल सेमिनरी की स्थापना की।

और इसलिए, यह एक पुराने लेखक हैं, और उनके पास चार खंडों का एक सेट है जिसे संग्रहित लेखन कहा जाता है। मुझे उनके बारे में जो पसंद है वह यह है कि बहुत सारे विषयों को कवर किया गया है, और वे आम तौर पर छोटे होते हैं ताकि आप बहुत अधिक अभिभूत न हों। उनके पास कई क्षेत्रों पर कुछ बहुत अच्छे लेख भी हैं।

स्वतंत्र इच्छा पर एक बहुत अच्छा लेख। आप जॉन मुरे को शास्त्रीय अर्थ में एक कैल्विनिस्ट के रूप में पहचानेंगे। और फिर भी, मैं अपने छात्रों को स्वतंत्र इच्छा पर उनका लेख बिना बताए पढ़ने के लिए कहता था कि इसे किसने लिखा है, जब तक कि हम इस पर चर्चा नहीं कर लेते।

और वे सभी इससे बहुत प्रभावित हुए। लेकिन जब आप कैल्विनवाद या कैल्विन या कुछ और शब्द का उल्लेख करते हैं तो बहुत से लोग इससे दूर हो जाते हैं। आपको इन चीजों का अध्ययन करना होगा, न कि उनके बारे में सिर्फ रूढ़िबद्ध धारणाएँ बनानी होंगी।

लेकिन यहाँ मैंने आपको जो नोट्स दिए हैं, उनके पहले पृष्ठ पर एक उद्धरण है। पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के बारे में बात करना उचित है। सवाल यह है कि कैसे? अब, यह एक बड़ा सवाल है।

आप इस प्रश्न को कई तरीकों से लागू कर सकते हैं। कभी-कभी, यह बाइबल में कही गई बात नहीं होती; यह बाइबल का मतलब है। कविता का क्या मतलब है? पत्रों का क्या मतलब है? क्योंकि इसका बहुत कुछ इस बात से लेना-देना है कि क्या? उत्पाद से।

और इसलिए, हम सवाल पूछते हैं, पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों का मार्गदर्शन और निर्देशन कैसे करती है? जैसा कि मरे कहते हैं, शास्त्र ही अभ्यास का एकमात्र अचूक नियम है। इसका परिणाम यह है कि हमें आत्मा के नए रहस्योद्घाटन की तलाश नहीं करनी चाहिए, उस पर निर्भर

नहीं रहना चाहिए, या उसकी मांग नहीं करनी चाहिए। हम रहस्योद्घाटन और प्रेरणा के युग में नहीं रहते हैं।

हम बाइबल के विकास के बजाय बाइबल तक सीमित रहने के युग में जी रहे हैं। हम परमेश्वर के वचन को विरासत में पाते हैं, उसे बनाते नहीं या उसे लिखते नहीं। इसका परिणाम यह है कि हम आत्मा के नए रहस्योद्घाटन की तलाश नहीं कर सकते, उस पर निर्भर नहीं रह सकते या उसकी मांग नहीं कर सकते।

हम रहस्योद्घाटन और प्रेरणा के युग में नहीं जी रहे हैं। पवित्र शास्त्र की पर्याप्तता को दरकिनार करना, जिसकी गवाही आत्मा देती है, पवित्र आत्मा का अपमान करना है। हमारे लिए जीवन के मामलों में हमें निर्देशित करने के लिए विशेष रहस्योद्घाटन की अपेक्षा करना या मांग करना पवित्र शास्त्र की पर्याप्तता को कमजोर करता है।

यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम आत्मा के संचालन को अभ्यास के उस अचूक और पर्याप्त नियम से अलग करें जो उसने हमें प्रदान किया है। एकमात्र तरीका जिससे हम इस त्रुटि से बच सकते हैं, यानी आत्मा से सीधे सूचना पर निर्भर रहना, यह बनाए रखना है कि पवित्र आत्मा का निर्देश और मार्गदर्शन साधनों के माध्यम से होता है, एक कीवर्ड है, उन साधनों के माध्यम से जो उसने प्रदान किए हैं। उसने पहले ही, हम जोड़ सकते हैं, प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के माध्यम से प्रदान किया है, और यह उसका कार्य है कि हम जीवन की विभिन्न स्थितियों में शास्त्र की सही व्याख्या और अनुप्रयोग करने में सक्षम हों।

तत्काल प्रभाव द्वारा मार्गदर्शन की धारणा, जिसे आमतौर पर आत्मा होने का दावा किया जाता है, मार्गदर्शन के इस प्रश्न पर हमारी सोच को विकृत करती है और प्रेरितों ने कुलुस्से के विश्वासियों के मामले में जो प्रार्थना की थी, उसे निरर्थक बनाती है। हम उस पाठ के बारे में विस्तार से बात करने जा रहे हैं, और यह 2 तीमुथियुस की इस समझ को कमजोर करता है कि सभी शास्त्र ईश्वर-प्रेरित हैं और हर चीज़ के लिए पर्याप्त हैं। अब यह उनकी संग्रहित लेखन पर पुस्तक से है, लेख खंड 1 में पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन है। तो, हम उस विचार को खोलने जा रहे हैं।

तो, आत्मा हमारा मार्गदर्शन करती है, लेकिन वचन के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन करती है, और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, आप देखेंगे कि विवेक और आत्मा के तरीके बहुत समान हैं, और कभी-कभी हमारी आंतरिक प्रक्रियाओं में उन्हें अलग करना बहुत मुश्किल होता है। पृष्ठ 1 पर तथाकथित रोशनी की अवधारणा, लगभग दो-तिहाई नीचे, को आत्मा की आंतरिक गवाही कहा जाता है। हमने एक गवाह के रूप में विवेक के बारे में बात की।

खैर, हम आत्मा के बारे में एक साक्षी के रूप में बात करने जा रहे हैं। तथाकथित प्रकाश की अवधारणा को आत्मा की आंतरिक साक्षी के रूप में सबसे अच्छा कहा जाता है। कुछ अंशों पर विचार करें।

रोमियों 8:16. आत्मा स्वयं, वे पहले पृष्ठ पर हैं। मैं आपको वाक्यांश दे रहा हूँ। आत्मा स्वयं गवाही देती है।

याद रखें, हमने विवेक से देखा कि साक्षी शब्द एक सामान्य शब्द है। अपनी आत्मा से गवाही दें कि हम परमेश्वर की संतान हैं। इसका एक मुक्तिदायक पहलू है।

हम जानते हैं कि हम ईसाई हैं क्योंकि हम इससे दूर नहीं जा सकते। धर्म परिवर्तन ईश्वर का चमत्कार है, और हम समझते हैं कि, हाँ, मेरे साथ वास्तव में कुछ हुआ था, और अब जब मैं प्रभु यीशु के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ रहा हूँ, तो मैं अधिक से अधिक देख रहा हूँ कि इसने मेरे जीवन को कैसे प्रभावित किया है। और इसलिए, आत्मा ने उस संबंध में गवाही दी, और हम इसके बारे में एक पल में एक श्रेणी में बात करेंगे।

1 यूहन्ना 5:10. जो परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, उसके पास क्या है? साक्षी आत्मा का संदर्भ है। साक्षी उसमें है।

आत्मा ने 1 यूहन्ना में पवित्रशास्त्र की गवाही सिखाई। रोमियों 5. परमेश्वर का प्रेम पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे हृदयों में डाला गया है। और हृदय, बाइबल में फिर से, मन है।

पवित्र आत्मा हमें आत्मविश्वास देता है। 1 यूहन्ना इस बारे में बहुत कुछ कहता है कि हम मसीह को जानते हैं। यूहन्ना को इस बात की गवाही देने के लिए लिखा गया था कि यीशु ही मसीहा है।

1 यूहन्ना को यह गवाही देने के लिए लिखा गया है कि हमने उस पर विश्वास किया है। 1 यूहन्ना में यह उद्धार का एक प्रकार का भरोसा है, और फिर भी यह उस तरीके से स्पष्ट है जिस तरह से वह इसे प्रस्तुत करता है। यह दिलचस्प है।

ठीक है, आइए आत्मा के ऐतिहासिक अवलोकन के बारे में बात करते हैं। रोमन कैथोलिक चर्च और सुधारकों के बीच अधिकार के मुद्दे को लेकर संघर्ष था। जैसा कि आप शायद अच्छी तरह जानते हैं, रोमनवाद में, चर्च सर्वोच्च अधिकार का प्रयोग करता है, जिसमें पवित्रशास्त्र का अर्थ बताने का एकमात्र अधिकार भी शामिल है।

उनका निर्माण वचन और चर्च था, लेकिन वचन कभी भी चर्च के विचारों से अलग नहीं होता। रोमन कैथोलिक चर्च के पास अपने अधिकार ढांचे हैं। हालाँकि, सुधारकों के पास केवल शास्त्र में ही अधिकार है, और विश्वासी के पास शास्त्रों का अध्ययन करने और उनके अर्थ के बारे में निष्कर्ष निकालने का अधिकार और जिम्मेदारी है।

इसलिए, चर्च शब्द के बजाय, सुधारकों ने आत्मा शब्द का इस्तेमाल किया। आत्मा वचन की गवाही देती है। यह कहने का एक सरल तरीका है।

आइए इसे थोड़ा और विस्तार से देखें। केल्विन ने खुद, और वैसे, जैसे ही आप केल्विनवाद या मेथोडिज़्म और इस तरह की चीज़ों में शामिल होते हैं, अपने आप पर एक एहसान करें। केल्विन को पढ़ें।

लोग उसके बारे में क्या कहते हैं, इस पर ध्यान मत दीजिए, और मुझे लगता है कि आप पाएंगे कि कैल्विन अपने अनुयायियों की तुलना में कहीं ज़्यादा समझ में आने वाला है। इसलिए उसे पढ़िए। कैल्विन ने चर्च शब्द से स्पिरिट शब्द में समीकरण बदल दिया।

सुधारकों के पास वचन के लिए एक नया अधिकार था, चर्च नहीं, बल्कि परमेश्वर की आत्मा, जो सभी विश्वासियों को समतल जमीन पर रखती है। उन्होंने इसे टेस्टीमोनियम का सिद्धांत कहा। अंदाज़ा लगाइए क्या? शब्द गवाह, शब्द गवाही, आत्मा उद्धार में मसीह की गवाही देती है, आत्मा हमें इसकी सच्चाई के बारे में समझाने में वचन की गवाही देती है।

कैल्विन ने आत्मा की भूमिका को दोषी ठहराने के रूप में देखा। कृपया उस शब्द को रेखांकित करें, विश्वासी के हृदय को दोषी ठहराना, और यही शास्त्र में है, मन, शास्त्र की सत्यता और अधिकार के बारे में। कैल्विन ने इसे वचन की प्रभावकारी पुष्टि कहा। हम ईसाईयों के रूप में शास्त्र में क्यों विश्वास करते हैं? हम एक ऐसे पाठ पर क्यों विश्वास करते हैं जिसका हम वास्तव में पालन नहीं करना चाहते हैं, लेकिन वह पाठ हमें यह स्पष्ट कर रहा है कि हमें इसका पालन करना चाहिए, और हम दोषी महसूस करते हैं? खैर, हम दो कारणों से दोषी महसूस करते हैं।

विवेक, यदि हमारा परिवर्तित मन अद्यतित है, और परमेश्वर की आत्मा हमें दोषी ठहरा सकती है, और मैं आपको यह बताने जा रहा हूँ कि कभी-कभी दोनों के बीच अंतर करने का कोई तरीका नहीं होता है। तो अंतिम निर्णायक कौन है? अंतिम निर्णायक, एक बार फिर, विश्वदृष्टि और मूल्य हैं जिन्हें परमेश्वर के वचन द्वारा सही ढंग से स्थापित किया गया है। कैल्विन के लिए, यह प्रभावशाली पुष्टि, आत्मा की भूमिका, अनुनय की भूमिका थी।

अनुनय, इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है आपको यह विश्वास दिलाना कि परमेश्वर का वचन सत्य है, और इसे सामने लाना आपकी जिम्मेदारी है। इसलिए, आत्मा की भूमिका अनुनय की है, विषय-वस्तु की नहीं। आत्मा ने पहले से ही प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से हमें पवित्रशास्त्र प्रदान करके विषय-वस्तु का ध्यान रखा है।

विषयवस्तु वचन थी जिसकी आत्मा गवाही देती है। इसलिए आत्मा के पास हमें यह बताने की निरंतर सेवा नहीं है कि हमें क्या विश्वास करना चाहिए। आत्मा के पास हमें गवाही देने और हमें यह समझाने की निरंतर सेवा है कि हमें क्या विश्वास करना चाहिए।

संतुष्ट नहीं, बल्कि दृढ़ विश्वास। राम, बर्नार्ड राम, जो बहुत पहले चले गए और बाइबिल के विद्वान थे, ने नव-प्रोटेस्टेंट तरीकों की व्याख्या पर बहुत कुछ लिखा। द विटनेस ऑफ द स्पिरिट उनका शोध प्रबंध था, और इसे एक किताब में रखा गया था, और यह विटनेस ऑफ द स्पिरिट के इस मुद्दे पर सबसे बेहतरीन छोटी किताबों में से एक है।

देखिए, आत्मा की गवाही कुछ लोगों द्वारा रोशनी कहे जाने वाले वर्णन का औपचारिक धार्मिक तरीका है। रोशनी, स्पष्ट रूप से, बात करने के लिए एक अच्छा शब्द नहीं है क्योंकि रोशनी अपने साथ एक अर्थ में, सामग्री और समझ का रूपक लेकर आती है। इस क्षेत्र में समझ को परिभाषित करना लोगों द्वारा रोशनी शब्द का उपयोग करने के तरीके से कहीं अधिक कठिन है।

भगवान ने मुझे प्रकाशित किया। खैर, भगवान ने आपको पवित्रशास्त्र के बारे में दोषी ठहराया। कुछ लोग आ सकते हैं और कह सकते हैं, ठीक है, भगवान ने मुझे प्रकाशित किया कि इस श्लोक का अर्थ है कि जब आप निश्चित रूप से दिखा सकते हैं कि वे गलत हैं।

ठीक है? तो, रोशनी का इस्तेमाल लोगों के साथ एक क्रॉबर की तरह किया जाता है ताकि वे पाठ के बारे में उनका नज़रिया जान सकें। लेकिन रोशनी के बजाय, यह वचन के लिए एक गवाही है। राम ने कैल्विन का सारांश दिया क्योंकि गवाही एक अनुनय है।

इस पर ध्यान दें। यह दृढ़ विश्वास है, आप देखिए। यह किसी चीज़ के बारे में दृढ़ विश्वास है।

यह अपनी स्वयं की विषय-वस्तु नहीं है। गवाही एक खुलासा करने वाली क्रिया है, न कि कोई प्रकट विषय-वस्तु। यह एक रोशनी है, कोई संचार नहीं।

अब, रोशनी शब्द की सही समझ है, लेकिन स्पष्ट रूप से, मैं इस शब्द से बचना चाहूंगा क्योंकि मुझे लगता है कि यह भ्रामक है। इस कारण से, कैल्विन ने उस उत्साही व्यक्ति का विरोध किया जिसने दावा किया कि रहस्योद्घाटन सामग्री थी, और यह विवादों में से एक नहीं था। वास्तव में, आरंभ में, वॉरफील्ड चमत्कारों के बारे में रोमन चर्च के साथ विवादास्पद था, और यह इतिहास का एक दिलचस्प हिस्सा भी है।

इसे आरंभिक उद्धार और प्रचार के कार्य के संदर्भ में सोचें। हमारे पास आत्मा की गवाही है जो हमारी आत्मा के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं, और आप इसे टेस्ट ट्यूब में नहीं डाल सकते, लेकिन हम इसे जानते हैं। यह एक आंतरिक दृढ़ विश्वास है।

आप इससे दूर नहीं जा सकते। खैर, आत्मा वचन की गवाही देती है, और हमारा विवेक वचन की गवाही देता है, और ये दोनों ही हमें सीधे और संकीर्ण रास्ते पर रखने के लिए हमारे साथ आंतरिक रूप से काम कर रहे हैं। लेकिन कोई विषय-वस्तु नहीं दी गई है।

यह एक दृढ़ विश्वास है क्योंकि विषय-वस्तु पहले से ही पवित्रशास्त्र में मौजूद है, और हमें उसी से संबंधित होना है। हमारे पास एक प्रेरित पवित्रशास्त्र है। हमारे पास प्रेरित व्याख्याकार नहीं हैं, और आप यह दावा करके उस समस्या से बच नहीं सकते कि आत्मा ने मुझे यह दृष्टिकोण बताया है।

अगर आपके पास बाइबल के 10 ईश्वरीय, समान रूप से प्रशिक्षित व्याख्याकार हैं और हम मान लें कि वे सभी ईश्वरीय स्तर पर समान हैं, और फिर भी वे असहमत हैं, तो आप क्या करेंगे? खैर, कौन सही है? आप कहेंगे, बेटा, मैं वह समस्या नहीं चाहता। खैर, यह एक समस्या है जो ईश्वर ने हमें दी है। अब, यह हमारी वास्तविकता का एक हिस्सा है।

समान रूप से ईश्वरीय, समान रूप से प्रशिक्षित व्यक्ति जो एक ही पाठ के बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण रखते हैं, यह एक तथ्य है, इसलिए यह ईश्वर की इच्छा का हिस्सा है। क्यों? संदेह में। हम नहीं जानते, लेकिन यही वह है जिसका हम सामना करते हैं।

और इसलिए, इसलिए, आप आगे आकर यह नहीं कह सकते कि, ठीक है, जैसा कि कुछ लोगों ने कोशिश की है, मेरी राय में भोलेपन से, आप यह नहीं कह सकते कि बाइबल की व्याख्या एक नैतिक मुद्दा है क्योंकि आप कह रहे हैं कि, फिर, समान रूप से ईश्वरीय लोग जो असहमत हैं, कोई अनैतिक है और कोई नैतिक है। बस इतना ही। यह एक ऐसी गली है जिस पर आप चलना नहीं चाहते।

यह इस तथ्य की समस्या को समझाने का एक बुरा तरीका है कि हमारे पास ईश्वरीय लोगों के बीच बाइबल के संबंध में विविधता है। आपको उस एक के लिए ईश्वर की आत्मा को दोष देना होगा जो गलत है, और, ज़ाहिर है, आप सही हैं, और दूसरा गलत है। हमेशा ऐसा ही होता है।

इन विचारों के बारे में सोचने का यह एक बुरा तरीका है। यह एक अनुनय है, विषय-वस्तु नहीं। प्रशंसापत्र अपने आप में एक खुलासा करने वाली कार्रवाई है, न कि कोई प्रकट विषय-वस्तु।

इसका मतलब यह है कि दृढ़ विश्वास आत्मा और विवेक के काम का हिस्सा है, और आपको इसे बाहर निकालना होगा। हमारे लिए ऐसा करना आम तौर पर आसान नहीं है क्योंकि वे दोनों एक ही काम कर रहे हैं, और यह केवल पवित्रशास्त्र का अंतिम वचन है जो निर्णय लेने में सक्षम होने जा रहा है। इस कारण से, कैल्विन ने उस उत्साही व्यक्ति का विरोध किया जिसने सामग्री के साथ रहस्योद्घाटन का दावा किया था। इसे प्रारंभिक उद्धार और प्रचार के कार्य के संदर्भ में सोचें।

हम दोषी हैं। हमें जो विषय-वस्तु दी गई है, वह हमारे पास नहीं है। विषय-वस्तु पवित्रशास्त्र में है।

अब, हम कुछ अन्य ग्रंथों के साथ इस बारे में थोड़ा और बात करेंगे। इस विषय का एक धर्मशास्त्रीय अवलोकन। त्रिएकत्व के संबंध में आत्मा की गवाही।

अगर आप गौर करें, तो यह आपके हैंडआउट के दूसरे पेज पर है, और मैं एक अलग पाठ से पढ़ रहा हूँ क्योंकि मेरी आँखें उस छोटे प्रिंट को पढ़ने के लिए बहुत खराब हैं, और वह अभी भी मेरा है। ठीक है। आपके नोट्स के दूसरे पेज पर एक धार्मिक अवलोकन है।

त्रिएकत्व के सम्बन्ध में आत्मा की गवाही। आत्मा की भूमिका मसीह को महिमा देना है। आप इसे यूहन्ना की पुस्तक और अन्य स्थानों से अच्छी तरह जानते हैं।

आत्मा को कभी भी अपने आप में एक अंत के रूप में नहीं माना जाता है। आत्मा त्रिदेवों में उधार लिया हुआ व्यक्ति नहीं है। आत्मा पिता और पुत्र के आदेश और कार्य को पूरा करती है।

आत्मा की भूमिका मसीह को महिमा देना है। आत्मा को कभी भी अपने आप में एक लक्ष्य के रूप में नहीं दर्शाया जाता है, बल्कि वह एक लक्ष्य तक पहुँचने का साधन है, और वह लक्ष्य मसीह है। वह यीशु को मसीहा के रूप में गवाही देता है।

वह हमें मसीह की ओर ले जाता है। वह मसीह की महिमा करता है। वह हमें वचन के द्वारा मसीह की शिक्षा देता है।

और आप इसे कागज़ के एक टुकड़े पर नहीं लिख सकते। यह कुछ ऐसा है जो आंतरिक रूप से होता है। इसकी पुष्टि की जाती है, और यह नहीं बताया जाता कि कैसे, लेकिन यह एक तथ्य है।

और फिर भी, उसी समय, मानवीय स्तर पर हम जो एकमात्र निर्णय ले सकते हैं, वह इस तथ्य के बारे में निर्णय है कि हम पवित्रशास्त्र की सही व्याख्या कर रहे हैं, और फिर भी, उसी समय, हमारे पास अभी भी विविधता है। तो, आप यहाँ मौजूद तनाव को देख सकते हैं क्योंकि परमेश्वर ने हमें प्रेरित व्याख्याकार देने का आदेश नहीं दिया है, केवल प्रेरित पवित्रशास्त्र में। राम के इस उद्धरण पर ध्यान दें।

पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व और कार्य पर चिंतन करने से पता चलता है कि वह ईश्वरत्व का कार्यकारी है। सृष्टिकर्ता और सृष्टि के बीच आध्यात्मिक या सत्तामूलक संबंध का कोई बाइबिल सिद्धांत नहीं है। वह हमसे अलग है, निर्माता और सृष्टि के बीच है।

यह संबंध सीधा है। यह ईश्वर की पवित्र आत्मा, दिव्य कार्यकारी द्वारा बनाया गया है। वह उद्धार को कार्यान्वित करता है।

कैसे? मसीह के तथ्य की गवाही देकर और उसकी गवाही देकर, यही तरीका है। एक तरह से यही हमारा गुप्त हथियार है। यह एक सीधा संबंध है।

क्षमा करें, मेरी आँखों में थोड़ी समस्या है। ईश्वरीय कार्यकारी सीधे सृष्टि और जीव को स्पर्श करता है। फिर भी इस स्पर्श में, कार्यकारी के रूप में इस कार्य में, अंदर से विवेक की तरह, वह अपने कार्य की योजनाएँ नहीं बनाता।

वह दूसरों की योजनाओं को क्रियान्वित करता है, अर्थात् परमेश्वर और वचन को। वह अपने से परे किसी चीज़ के संदर्भ में कार्य करता है। वह साक्षी है, जैसे विवेक साक्षी है।

वह वही है जो यूहन्ना 15:26 का साक्षी है, और इसलिए इस साक्षी की विषय-वस्तु उसके बाहर मौजूद है। वह क्या है जो उसके बाहर मौजूद है? पवित्रशास्त्र। और इसलिए आत्मा पाठ का साक्षी है, आपको और पाठ नहीं देता, और स्पष्ट रूप से आपको उस पाठ का अर्थ भी नहीं बताता।

पाठ को उसके महत्व के संदर्भ में देखना और उसकी व्याख्या करने की आपकी ज़रूरत यही है कि हम, यहीं पर रुकते हैं, और यही कारण है कि हमारे पास ईश्वरीय लोगों के बीच यह विविधता है जो समान रूप से प्रशिक्षित हैं। वह पिता का पुत्र को और पुत्र का शिष्यों को उपहार है, इसलिए वह दूसरे के इरादों को पूरा करता है। तो, आपके पास कुछ धर्मशास्त्र है।

इसके अलावा, उस धर्मशास्त्र में, आत्मा और रहस्योद्घाटन की गवाही। आत्मा वचन की गवाही देती है। वे स्वतंत्र गवाह नहीं हैं, न ही वे प्रतिस्पर्धा में हैं।

तो, मैंने आपको इस पर एक ग्रंथ सूची दी है। उम्मीद है, आप इसे थोड़ा और समझ पाएंगे, लेकिन यह विचार प्राप्त करने के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। आत्मा सामग्री के बारे में नहीं है। आत्मा

उस सामग्री का साक्षी है जो आपके पास पहले से है, और आपको यह पता लगाना होगा कि यह कैसे काम करती है।

दिन के अंत में, मुख्य बात यह है कि यह आपकी जिम्मेदारी है और बाइबिल की व्याख्या की भूमिका है कि आप निर्णय लें। आत्मा और छुटकारे के गवाह के रूप में, हमने रोमियों में देखा कि आत्मा एक व्यक्ति को उद्धार की आवश्यकता के बारे में वचन की सच्चाई को पहचानने और उसका जवाब देने में सक्षम बनाती है। हम लोगों को विश्वास नहीं दिला सकते।

हम उन्हें समझा भी नहीं सकते। हम उन पर जोर दे सकते हैं, हम उन्हें प्यासा बना सकते हैं, लेकिन हम उन्हें जीवन के झरने से पानी नहीं पिला सकते। लेकिन अगर वे काफी प्यासे हो जाते हैं, और हमारे पास परमेश्वर की आत्मा का गुप्त हथियार है जो उन्हें उस पाठ की सच्चाई के बारे में समझाता है, इसलिए जब मैं प्रचार करता हूँ, तो मैं उन्हें उन आयतों को पढ़ने के लिए कहता हूँ।

मैं उन्हें सिर्फ उद्धृत नहीं करता, बल्कि उन्हें पढ़ने के लिए कहता हूँ क्योंकि मुझे उम्मीद है कि आँखों के ज़रिए, यह उस व्यक्ति के गहरे भीतर तक पहुँचेगा। आत्मा की गवाही और व्याख्या।

बेशक, यहीं से बहुत सारा विवाद शुरू होता है। मैं इसे इस तरह से कहना चाहूँगा। हर आत्मा पवित्र आत्मा के साथ एक रिश्ता बनाए रखती है।

हम सभी एक रिश्ते को बनाए रखते हैं। मैं यहाँ बहुत विस्तार में नहीं जा रहा हूँ। आत्मा से भरे जाने का क्या मतलब है? खैर, शब्द भरना एक रूपक है।

डोरकास अच्छे कामों से भरपूर थी। इसका मतलब है कि डोरकास अच्छे कामों से पहचानी जाती थी। अगर आप विशेषता शब्द को भरण शब्द से जोड़ दें, तो मुझे लगता है कि आपको उस रूपक का बेहतर दृश्य मिलेगा।

आत्मा से भरे जाने का अर्थ है उस शिक्षा से युक्त होना जिसके बारे में आत्मा हमें समझाती है। आत्मा से भरे जाने का अर्थ आत्मा को और अधिक प्राप्त करना नहीं है। इसका अर्थ किसी ऐसी चीज़ को प्राप्त करना नहीं है जो किसी और के पास नहीं है।

आत्मा से भरे जाने का अर्थ है आत्मा की चीज़ों से पहचान होना, और आत्मा की चीज़ें स्वयं पाठ हैं। हर विश्वासी पवित्र आत्मा के साथ एक रिश्ता बनाए रखता है। जिसे आम तौर पर रोशनी कहा जाता है वह पुनर्जन्म का लाभ है जिसमें आत्मा विश्वासी को अपने और अपने काम के बारे में शास्त्र की शिक्षा के प्रति समर्पित होने की क्षमता का प्रयोग करने में मदद करती है।

धर्म परिवर्तन से पहले हमारे पास वह क्षमता नहीं थी। हमारे पास पुराना स्वभाव है, और हम पुराने स्वभाव का अनुसरण करते हैं। धर्म परिवर्तन हमें एक नया स्वभाव, विशेषताओं की एक नई संरचना प्रदान करता है।

अब, हम पुराने के बजाय उन पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और हम पुराने और नए स्वभाव के बीच उस लड़ाई में आ जाते हैं। पवित्रशास्त्र के इच्छित अर्थ का आकलन करने की वास्तविक प्रक्रिया ही व्याख्याशास्त्र का कार्य है। यह व्याख्या का कार्य है।

इस इच्छित अर्थ को उजागर करने की क्षमता व्याख्याकार के शास्त्रों को लागू करने, व्याख्याशास्त्र के विज्ञान और कला को लागू करने, और शास्त्रों द्वारा वास्तव में जो सिखाया जाता है, उसे प्रस्तुत करने के लिए तैयार होने के कौशल पर निर्भर करती है। आत्मा विषय-वस्तु का संचार नहीं करती, न ही नया रहस्योद्घाटन करती है, न ही रहस्योद्घाटन की व्याख्या करती है। यह व्याख्याकार को नई विषय-वस्तु नहीं देती; बल्कि, आत्मा, अकथनीय तरीकों से, व्याख्याकार को उस शिक्षा के प्रति समर्पित होने में मदद करती है जिसका मूल्यांकन किया जा रहा है।

और मैं यहाँ तक कहूँगा कि, विशेष रूप से व्याख्याकार को यह समझाना कि वह अपने स्वयं के पूर्वधारणाओं को काम में न आने दे, और फिर भी व्याख्याकार के लिए उन रचनात्मक संरचनाओं को न आने देना लगभग असंभव है जो वचन की व्याख्या में उनका मार्गदर्शन करती हैं। तो, आप एक वेस्लेयन के रूप में आई. हॉवर्ड मार्शल को और कैल्विनिस्ट परंपराओं के जॉन मरे जैसे कुछ प्रमुख प्रतिनिधियों को एक साथ रख सकते हैं। वे एक मार्ग के बारे में एक अलग निष्कर्ष पर पहुँचेंगे, और फिर भी वे एक साथ ईश्वर के साथ संगति रखते हैं।

यह मानवीय क्षेत्र का हिस्सा है। भगवान ने इस पर काबू पाने का आदेश नहीं दिया है। वह हमें इस तनाव के साथ छोड़ देता है।

वह हमें उस विविधता के साथ छोड़ देता है, और हम परमेश्वर के वचन से बंधे होते हैं, और हमें अपना रास्ता बनाना होता है और अपने निर्णय लेने होते हैं, लेकिन अन्य ईसाइयों के साथ सद्भाव में रहना होता है जिन्होंने अन्य रास्ते चुने हैं। अब, हर कोई सही नहीं है, लेकिन किसी भी कारण से, परमेश्वर ने प्रक्रिया के बारे में उससे अधिक निर्णय लिया है जितना कि उसके पास सही होने का अधिकार है, जब तक कि हम एक ही क्षेत्र में हैं। और यह आमतौर पर वह नहीं है जिसे हम प्रमुख रूढ़िवादी मुद्दे कहते हैं जो यहाँ प्रश्न हैं।

अब, आपके नोट्स में अगले पेज पर, नीचे, या पेज दो और तीन पर एक एक्ट है। मैंने आपको देखने के लिए आइटम की एक ग्रंथ सूची दी है। और यह सिर्फ एक छोटा सा हिस्सा है। जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, यह सब खोलने की कोशिश में बहुत सारी ऊर्जा दी गई है।

क्रेग कीनर एक मेजर हैं, ज़्यादातर आर्मीनियन दिशा में। उनके पास बहुत सारा साहित्य है। मुझे वह याद नहीं है।

शायद मेरे पास भी यह है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मेरे पास भी है। ये ऐसी चीजें हैं जिनका मैं मुख्य रूप से खुद इस्तेमाल करता हूँ। और इसलिए आप भी ऐसा कर सकते हैं, आपकी अपनी परंपराएँ हैं।

आप उस दृष्टिकोण से इसका पता लगाते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि आपको इसका पता लगाना होगा। आप यह नहीं कह सकते कि आत्मा ने मुझे बताया कि यह सत्य है।

नहीं, बाइबल आपको बताती है कि क्या सच है। हम पवित्रशास्त्र के बारे में दृढ़ विश्वास रखते हैं, लेकिन ये विश्वास उन प्रतिमानों के भीतर काम करते हैं जिन्हें हमने पहचानने और व्याख्या में लागू करने के लिए चुना है। यही ईसाई समुदाय की विविधता है।

रोमन कैथोलिक चर्च इससे छुटकारा पाना चाहता है। लेकिन सच्चाई यह है कि आप इससे छुटकारा नहीं पा सकते क्योंकि यह विश्वास करने वाले समुदाय में ईश्वर द्वारा निर्धारित है। ईश्वर ने ऐसा करने का फैसला क्यों किया, मुझे नहीं पता, लेकिन उन्होंने ऐसा किया।

और इसलिए हमें उनकी संप्रभुता और इस तथ्य के आगे झुकना होगा कि, किसी भी कारण से, वह आपको एक प्रेरित टिप्पणी देने की तुलना में इसे एक बेहतर दृष्टिकोण के रूप में देखते हैं। शायद बाबेल के टॉवर के सादृश्य से, मुझे नहीं पता, लेकिन फिर भी, यह वहाँ है। तो यह इतिहास है, कुछ धर्मशास्त्र है, लेकिन मैं पाठ को देखना चाहता हूँ।

मैं चाहता हूँ कि आप 1 कुरिन्थियों के अध्याय 1, क्षमा करें, अध्याय 2, श्लोक 6 से 16 को देखें। यहाँ वाल्टर कैसर का लेख है जो मैंने आपको दिया है और मुझे लगता है कि यह आपको पढ़ने में अच्छा लगेगा। मैं देखूँगा कि क्या हम इसे बाइबिलिकली लर्निंग साइट पर डाल सकते हैं ताकि आप इसे प्राप्त कर सकें।

मुझे नहीं पता कि वेस्टमिंस्टर थियोलॉजिकल जर्नल के नियम इस तरह की चीज़ों को शेयर करने के बारे में क्या हैं। लेकिन अगर आप मुझे सीधे ईमेल करेंगे, तो मैं इसे आपके साथ शेयर करूँगा और इसके परिणाम भुगतूँगा। लेकिन सच्चाई यह है कि मुझे नहीं पता कि हम इसे किसी सार्वजनिक साइट पर डाल सकते हैं या नहीं।

लेकिन यह आपके लिए पढ़ने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण लेख है। ठीक है, अब आइए इस अंश के बारे में बात करते हैं, 1 कुरिन्थियों अध्याय 2, श्लोक 6 से 16। यदि आप इसे देखें, तो मैंने आपको पहले बताया था कि अध्याय 1 से 4 पॉल की क्षमायाचना है, क्षमायाचना इस अर्थ में नहीं कि मुझे खेद है, बल्कि प्रमाण के अर्थ में क्षमायाचना है।

कुरिन्थियों ने सुसमाचार के पौलुस के संदेश के विरुद्ध आवाज़ उठाई। और पौलुस ने पीछे हटते हुए कहा, देखो, यह मेरा अपना अच्छा विचार नहीं है। और वह ऐसा चरमोत्कर्ष पर करता है, अध्याय 2:6 से 16 में 1 से 4 के वाटरशेड पाठ की तरह।

अगर आप 2:1 से 5 में गौर करेंगे, तो मैं, भाई, जब मैं तुम्हारे पास आया, और अगर आप वहाँ से नीचे देखें, तो मैं, तुम, मैं, तुम, मैं, तुम, मैं, तुम, मैं, तुम। और अगर आप अध्याय 3, श्लोक 1 पर जाएँ, तो मैं, तुम, मैं, तुम, मैं, तुम। लेकिन अध्याय 2, श्लोक 6 से 16 में, यह मैं, तुम नहीं है, यह हम हैं।

हम कौन हैं? क्या यह मैं हूँ, या आप? मुझे ऐसा नहीं लगता। और न ही बहुत से टिप्पणीकारों को ऐसा लगता है। यह कैसर का अपना कोई बढ़िया विचार नहीं है।

वह पिछले टिप्पणीकारों और पाठ का मूल्यांकन करने वालों पर अपनी निर्भरता के बारे में बात करते हैं। मेरे लिए, यह सामान्य ज्ञान की बात है। उन्होंने हम में बदलाव किया, क्योंकि जब वह 6 से 16 में बोलते हैं, तो वह प्रेरित समुदाय के बारे में बात कर रहे होते हैं।

यहाँ पर वह एक प्रेरित के रूप में अपने अधिकार को सील करता है ताकि उन्हें बता सके कि उन्हें क्या विश्वास करना चाहिए। और इसका चरमोत्कर्ष पद 10 में आता है, जहाँ वह कहता है, परमेश्वर ने प्रकट किया। प्रकट किया गया बाकी सब से बढ़कर है क्योंकि यह परमेश्वर का प्रकट किया हुआ वचन है।

यह प्रकट सत्य है। यह आधिकारिक सत्य है। हमें उस सत्य के प्रति विवेक और आत्मा की गवाही मिलती है।

ध्यान दें कि वह क्या कहता है। हम बुद्धिमान की बातें करते हैं। हालाँकि, उनमें से जो पूरी तरह से परिपक्व हैं, वे इस दुनिया के बुद्धिमान नहीं हैं।

हम इस दुनिया के शासक हैं। हम शून्य हो रहे हैं। वह दूसरी जगहों के शासकों के बारे में बात करता है।

दुनिया के बुद्धिजीवियों को समझ नहीं आया। वे कहते हैं, अगर उन्हें समझ होती, तो वे परमेश्वर के प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाते। उन्हें यह समझ नहीं आया क्योंकि इसे देना हमारे धर्म परिवर्तन के अनुभव का एक हिस्सा है ताकि हम पवित्रशास्त्र को सही ढंग से पढ़ सकें।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे बाइबल का मतलब नहीं समझ सकते। बात बस इतनी है कि वे इस पर विश्वास नहीं करते क्योंकि बाइबल पाठक-केंद्रित नहीं है।

बाइबल पाठ-केंद्रित है। बाइबल का अर्थ बाइबल में है। यह पाठक में नहीं है।

परिणामस्वरूप, हमें सावधान रहना चाहिए कि हम इसे कैसे अपनाते हैं। हम परमेश्वर की बुद्धि को रहस्य में बोलते हैं। वह बुद्धि जो छिपी हुई थी, जिसे परमेश्वर ने संसार से पहले हमारी महिमा के लिए ठहराया था, जिसे कोई नहीं जानता था।

क्योंकि अगर वे इसे जानते, तो वे प्रभु को क्रूस पर नहीं चढ़ाते। लेकिन जैसा लिखा है, जो मैंने देखा और सुना, और जो बातें मनुष्य के दिल में आईं, वे ही बातें परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं। परिणामस्वरूप, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, वह अंश स्वर्ग के बारे में नहीं है।

यह ज्ञानमीमांसा के बारे में है। श्लोक 10 को देखें। लेकिन हम पर, उस प्रकट करने वाले समुदाय पर, हम उन्हें प्रेरित और भविष्यद्वक्ता कहते हैं, परमेश्वर ने आत्मा के द्वारा ये बातें प्रकट कीं।

यह आत्मा का कार्य है जो प्रेरितों के साथ है, जो रहस्योद्घाटन करता है, हमारे साथ नहीं। क्योंकि आत्मा सब बातों की खोज करता है, परमेश्वर की गहरी बातों को देखता है। जिनके बीच मनुष्य जानता है, उनके लिए वह सभी प्रकार की उपमाओं का उपयोग करता है।

हम संसार की आत्मा नहीं, बल्कि परमेश्वर की ओर से आत्मा प्राप्त करते हैं। हम पद 13 में बोलते हैं, जो बातें, ये बातें परमेश्वर ने आत्मा के द्वारा प्रकट कीं। हम उन शब्दों में नहीं बोलते, जो मनुष्य की बुद्धि सिखाती है, बल्कि जो आत्मा सिखाती है, आध्यात्मिक बातों को आध्यात्मिक शब्दों के साथ मिलाते हुए।

अब, इस पाठ में बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनके बारे में आप बात कर सकते हैं। और मैं कर सकता हूँ; मैं केवल इस एक बात के बारे में बात करने जा रहा हूँ। तो, 1 कुरिन्थियों अध्याय 2 में, पुष्टि यह है कि परमेश्वर ने हमें आत्मा के माध्यम से अपना वचन दिया है।

और यही बात इसे आधिकारिक बनाती है। यही बात प्रेरित पौलुस को उसके उपदेश में आधिकारिक बनाती है। इसलिए, यह इस बात का तुरूप का पता है कि किसका सुसमाचार सही सुसमाचार है और अदालत में क्या है।

ठीक है। वैसे, इस पाठ का इस्तेमाल अक्सर रोशनी की अवधारणा में किया जाता है, जैसे कि यह मुझ पर लागू होता है। नहीं, यह मैं नहीं हूँ।

यह मैं नहीं, आप हैं। यह हम हैं, यानी प्रेरित समुदाय, वह प्रकट करने वाला समुदाय जिसे परमेश्वर ने अपने सत्य को धर्मग्रंथ पढ़ने में स्थानांतरित करने के लिए चुना है। मुझे लगता है कि यह इस पाठ का सबसे अच्छा पाठ है।

ठीक है। तो यह एक हिस्सा है, जैसा कि हमने बात की है, जो इस चर्चा में महत्वपूर्ण है। और कैसर का लेख आपके लिए इसे और अधिक विस्तार से खोल सकता है।

दूसरा, रोमियों 8, 14 में पुष्टि, यदि आप एक पल के लिए रोमियों 8, 14 और गलातियों 5, 18 को देखें, तो यह व्याख्यान काफी हद तक खत्म हो जाएगा क्योंकि हम इन ग्रंथों को देख रहे हैं, जिसमें थोड़ा समय लगता है, लेकिन यह महत्वपूर्ण है। रोमियों 8, 14. मुझे इन्हें स्लाइड पर रखना चाहिए था।

रोमियों 8:14. हम आयत 12 पर वापस जाते हैं, जहाँ से पैराग्राफ़ शुरू होता है। तो फिर, भाई, हम शरीर के कर्जदार नहीं हैं, कि शरीर के अनुसार जिएँ।

क्योंकि यदि हम शरीर के अनुसार जीवन जीते हैं, तो मरना अवश्य है। परन्तु यदि आत्मा से शरीर की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे। आत्मा ऐसा कैसे करती है? वचन को लागू करने के द्वारा।

जितने लोग आत्मा के द्वारा चलाए जाते हैं। यह एक रूपक है। नेतृत्व शब्द एक रूपक है।

इसका मतलब है, आत्मा द्वारा निर्देशित होना। तो, आपको इस सवाल का जवाब देना होगा कि ऐसा कैसे होता है? यह परमेश्वर के वचन के माध्यम से होता है। हम आत्मा द्वारा निर्देशित होते हैं, सीधे अर्थ में नहीं, बल्कि हमें शास्त्रों का पालन करने के लिए प्रेरित करने के अर्थ में।

केवल दो जगहें हैं जहाँ सीसे का प्रयोग रूपक के रूप में किया गया है। एक यहाँ रोमियों 8 में, और दूसरा गलातियों 5, 18 में। हम आत्मा के द्वारा चलाए जाते हैं ताकि हम आत्मा के फल के अनुसार जीवन जीएँ और शरीर के कामों का विरोध न करें।

तो, सीसा एक रूपक है। वास्तव में, इस पर कुछ लेख हैं जो बताते हैं कि सीसा पवित्रीकरण का एक रूपक है। क्योंकि आत्मा हमारे पवित्रीकरण में बहुत अधिक काम करती है, जो कि अनुप्रयोग, दृढ़ विश्वास है, विषय-वस्तु देना नहीं, विषय-वस्तु की व्याख्या भी नहीं, बल्कि उस विषय-वस्तु को हमारी अपनी आंतरिक सोच, हमारी अपनी आंतरिक प्रक्रियाओं पर लागू करना है जब हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं।

जैसा कि मैंने कहा, इन दोनों ग्रंथों में नेतृत्व पवित्रीकरण का एक रूपक है। यह किसी अतिरिक्त बाइबिल प्रक्रिया के लिए कोई रहस्यमय आह्वान नहीं है। वॉरफील्ड के पास आत्मा के नेतृत्व पर एक लेख है, जो इसे बहुत अच्छी तरह से बताता है।

तीन, ऊपरी कमरे में प्रवचन। इस पर बहुत दावा किया जाता है। यह यीशु का ऊपरी कमरे में शिष्यों के साथ अपने सांसारिक शरीर में अंतिम क्षण है।

मुझे लगता है कि वे फसह का पर्व मना रहे हैं। इस बारे में बहुत चर्चा है कि उन्होंने भोजन खाया या नहीं, लेकिन वे निश्चित रूप से संगति में हैं, और यीशु उन्हें शिक्षा दे रहे हैं। और उस संदर्भ में, हमारे पास कुछ बहुत ही रोचक पाठ हैं जहाँ यूहन्ना 14:26 है, आइए हम बस इन्हें जल्दी से देखें।

यूहन्ना 14:26. इनका उपयोग प्रत्यक्ष रहस्योद्घाटन के लिए प्रमाण ग्रंथों के रूप में किया जाता है, लेकिन यह संदर्भ नहीं है। यूहन्ना 14:26.

यदि आप इस पर ध्यान दें, लेकिन सांत्वना देने वाला, वह आत्मा है, पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें याद दिलाएगा। अच्छा, आप कौन हैं? यह ऊपरी कमरा है। यीशु किससे बात कर रहे हैं? वह शिष्यों से बात कर रहे हैं, जो शास्त्र के अनुपात में चर्च के लिए परमेश्वर के निरंतर रहस्योद्घाटन का मूल बनने जा रहे हैं।

कुछ ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने लिखा जो वहाँ नहीं थे, जैसे कि पॉल और ल्यूक, लेकिन हमारे पास दमिश्क के रास्ते और तीसरे स्वर्ग में बुलाए जाने के संबंध में पॉल का उत्तर है। पॉल को समझाया गया था, और पॉल ल्यूक का गुरु था। वास्तव में, चर्च के पिता मार्क के बारे में बहुत संवेदनशील हैं।

मार्क पीटर का छात्र था। ल्यूक पॉल का छात्र था। उनकी जानकारी पीटर और पॉल से आई थी।

यह कोई अनोखी बात नहीं थी। इसकी उत्पत्ति अपने आप नहीं हुई। यह दिलचस्प है कि कैसे आरंभिक चर्च ने मार्क और ल्यूक के बारे में बयानों में हमेशा पीटर और पॉल का उल्लेख किया।

तो, यह ऊपरी कमरे में चर्चा है। और इसलिए, आपके दिमाग में चीजों को लाना, मेरा मानना है कि यह इन व्यक्तियों का वादा है जो सुसमाचार का निर्माण करते हैं, यीशु ने जो कहा उसे याद रखें और उसे सटीक रूप से पुनः प्रस्तुत करें। सुसमाचारों के बारे में बात करने के लिए बहुत सी चीजें हैं, यहां तक कि सुसमाचार के खातों के भीतर विविधता भी है, और यह सब किसी अन्य समय में अन्य तरीकों से संबोधित किया जा सकता है।

ठीक है, 16:13. अभी भी ऊपरी कमरे में प्रवचन चल रहा है। 16:13.

क्षमा करें, मेरी आँखें। यह कैसा है? जब सत्य की आत्मा आ गई है, तो वह आपको सभी सत्यों में मार्गदर्शन करेगी। अब, बहुत से लोग यह दावा करते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि वे संदर्भ से बाहर हैं।

गाइड यू शिष्यों के बारे में बात कर रहा है। आपको सभी सत्यों में मार्गदर्शन करेगा, लेकिन वह अपनी ओर से नहीं बोलेगा, बल्कि जो कुछ भी वह लाएगा, वही बोलेगा, और जो कुछ भी आने वाला है, वह आपको बताएगा। तो यहाँ इस समुदाय और उस समुदाय के लिए एक और वादा है जिसका यह प्रतिनिधित्व करता है।

1526 एक और है। 1526. लेकिन जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूंगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, वह मेरी गवाही देगा, और इस कारण भी कि वह मेरे साथ रहा है, गवाही देगा।

तो, यहाँ गवाही देने का मुद्दा है, मसीह की गवाही देना। लेकिन सच्चाई यह है कि ये वादे हमारे लिए सभी बातें प्रकट करने या यहाँ तक कि सभी बातें हमारे दिमाग में लाने के वादे नहीं हैं। 14 में दिया गया वह अंश परीक्षा से पहले प्रार्थना करने के लिए नहीं है।

मैं प्रार्थना करूँगा कि परमेश्वर आपके मन में वे बातें लाएँ जिनका आप अध्ययन करते हैं, लेकिन ज़रूरी नहीं कि वे सभी बातें जो आपने सुनी हैं, जब तक कि आपने उनका अध्ययन न किया हो। ठीक है? अगर आपको समझ में नहीं आया तो यह सिर्फ एक मज़ाक है। इसलिए, इस घटना और श्रोताओं के संदर्भ में, मुख्य पाठ एक सीमित समूह पर लागू होते हैं, अर्थात् प्रेरित और वे लोग जो घटना या वचन की स्मृति को सुरक्षित रखेंगे।

ये किसी को भी दिए जाने वाले रहस्योद्घाटन के सामान्य वादे नहीं हैं। यह परमेश्वर का एक वर्णनात्मक पहलू है जो यह सुनिश्चित करता है कि हमें अंततः वह मिले जो वह अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से चाहता है। यहाँ एक और पाठ है जिसका अत्यधिक दुरुपयोग किया गया है।

1 यूहन्ना 2, आयत 26 और 27. हमें इस पर गौर करने की ज़रूरत है। 1 यूहन्ना 2, आयत 26 और 27.

अब, आप सभी जो इन वीडियो को सुन रहे हैं, उन्हें हम बेरियन कहेंगे। यह आपका काम है कि आप बाहर जाएं और अपना होमवर्क खुद करें। मैं आपको सुझाव दे रहा हूँ, और जिस तरह से मैंने यह किया है, और जिन परिस्थितियों में मैं आया हूँ, और आपकी प्रतिक्रिया एक बेरियन की तरह ही होगी जो इसे जांचने के लिए है।

लेकिन अब इसे सुनिए। 1 यूहन्ना 2, आयत 26 और 27 में। मैंने सुना है, लोगों ने मुझ पर यह बात फेंकी है।

पद 24. यूहन्ना अपने शिष्यों से बात करता है, जिन्हें उसने उपदेश दिया है। तुममें वही बात बनी रहे, जो तुमने आरम्भ से सुनी है।

यदि जो तुमने शुरू से सुना है वह तुम में बना रहता है, तो तुम भी बेटे और पिता में बने रहोगे। संभवतः यह उनके धर्म परिवर्तन में यूहन्ना की सलाह और शिक्षा का संदर्भ है। और यही वह वादा है जो उसने हमसे वादा किया है, अर्थात् अनंत जीवन।

ये बातें मैंने तुम्हें उन लोगों के बारे में लिखी हैं जो तुम्हें गुमराह करना चाहते हैं। तो, हमारे यहाँ घुसपैठिये हैं। हमारे पास एक और श्रोता है जिससे जॉन इन लोगों को छुड़ाने की कोशिश कर रहा है।

पद 27. और तुम जो अभिषेक पाते हो, वह क्या है? मैं उसे समझाता हूँ। वह तुम में बना रहता है, और तुम्हें किसी से सिखाने की आवश्यकता नहीं।

लेकिन जैसा कि उसका अभिषेक तुम्हें सब बातों के बारे में सिखाता है और यह सच है, झूठ नहीं, जैसा कि मैंने तुम्हें सिखाया है, तुम उसमें बने रहो। ठीक है। तो, श्लोक 27 को बाहर निकाल दिया गया है कि आपको शिक्षकों की आवश्यकता नहीं है।

तो फिर, यीशु ने ऐसा क्यों कहा कि मैं तुम्हें लोगों को सिखाने के लिए दुनिया में भेजूंगा? पौलुस ने ऐसा क्यों कहा कि जैसे मैंने तुम्हें सिखाया है, वैसे ही तुम भी दूसरों को सिखाओ? देखिए, अगर तुम कहते हो कि तुम्हें शिक्षकों की ज़रूरत नहीं है, तो यह शास्त्र के खिलाफ़ होगा। तो, यह कुछ अलग ही बात कह रहा है। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, अभिषेक, तो वह क्या है? खैर, मुझे लगता है कि यह परमेश्वर की आत्मा है जो इस विश्वास में काम कर रही है कि यूहन्ना जो उन्हें सिखा रहा था, वह सच था।

आप उससे क्या प्राप्त करते हैं, और आपको किसी को भी आपको सिखाने की आवश्यकता नहीं है। आप एक शब्द जोड़कर अपनी समझ में इस पूरे संदर्भ को सीधा कर सकते हैं। यदि आप श्लोक 27 में ध्यान दें, तो आपको किसी और को आपको सिखाने की आवश्यकता नहीं है।

पद 20 में, पद 24 में शुरू की गई और पद 26 में नीचे की ओर, वहाँ लोग उन्हें सिखाने की कोशिश कर रहे थे। यूहन्ना ने जो सिखाया था, उससे अलग कुछ। यूहन्ना वापस आता है और कहता है, एक मिनट रुको, जब मैंने तुम्हें सिखाया, तो तुम दोषी ठहराए गए थे; तुम्हें यीशु पर विश्वास करने के लिए अभिषिक्त किया गया था।

और यह बात तो इस बात से पहले की है कि यह सब लिखा भी नहीं गया है, आप देखिए। यह तब लिखा गया जब वे मुसीबत में थे, और उन्हें लिखना पड़ा। उसने कहा, उनकी बात मत सुनो; तुममें अभिषेक है; जब मैंने तुम्हें सिखाया कि यह सच है, तो तुम दोषी ठहराए गए थे।

आप इसे क्यों छोड़ेंगे? आपको किसी और की जरूरत नहीं है जो आपको सिखाए। अब, आपको उस पाठ को ध्यान से पढ़ने की जरूरत है क्योंकि यह नहीं कह रहा है कि आपको शिक्षकों की जरूरत नहीं है। यह कह रहा है कि आपको ऐसे अन्य शिक्षकों की जरूरत नहीं है जो सही शिक्षा को भटकाते हैं और जो आपको दी गई है उसे बिगाड़ देते हैं।

तो, ऊपरी कक्ष प्रवचन, 1 यूहन्ना का एक और मुद्दा है, और एक और है जो एक प्रमुख है, और मैं वास्तव में समय से अधिक हो गया हूँ, लेकिन मुझे आपको इसे दिखाना होगा। और मुझे आपको इस पर थोड़ा नोट्स पढ़ने देना होगा। हालाँकि, कुलुस्सियों के अध्याय 1 में, पॉल एक दिलचस्प कथन देता है जिसे हजारों बार संदर्भ से बाहर फेंक दिया जाता है।

और कुलुस्सियों में असली समस्या यह है कि हम वही सुन रहे हैं जिसे मैं पॉल की धार्मिक भाषा कहता हूँ। पॉल बहुत सारे रूपकों का उपयोग करता है। वह कुछ नया पेश नहीं कर रहा है क्योंकि वह खुद उस स्थिति में नहीं था, लेकिन इपफ्रास ने संभवतः पॉल के संरक्षण में चर्च की स्थापना की।

लेकिन कुलुस्सियों के अध्याय 1, श्लोक 9 और उसके बाद, मैं अमेरिकन स्टैंडर्ड संस्करण 1901 से पढ़ रहा हूँ। यह एक बहुत ही औपचारिक संस्करण है। इस कारण से, हम भी, जिस दिन से हमने इसे सुना है, आपके लिए प्रार्थना करना और विनती करना बंद नहीं करते हैं कि आप संतुष्ट हो जाएँ।

ठीक है, भरा हुआ क्या है? भरा हुआ एक रूपक है। इसका मतलब है विशेषता होना, न कि अधिक पाना। हो सकता है कि वह अपनी इच्छा के ज्ञान से भरा हो।

इसका मतलब ज्ञान प्राप्त करना नहीं है; इसका मतलब है कि इसके द्वारा विशेषता प्राप्त करना। आप देखिए, इस संदर्भ का मुद्दा यह है कि यह एक पत्र है। हमारे पास टेलीफोन वार्तालाप का केवल एक छोर है।

उन्हें पहले से ही सिखाया गया था। पॉल की टीम से उन्हें ईसाई सत्य की नींव दी गई थी। और उसके परिणामस्वरूप, पॉल कहते हैं, मुझे आपको यह दोहराने की जरूरत नहीं है।

मैं आपसे यह माँग रहा हूँ कि आप इसके अनुसार जिँ, चरित्रवान बनें, और सभी आध्यात्मिक ज्ञान और समझ में उसकी इच्छा के ज्ञान से भरे रहें क्योंकि यही है। प्रभु के योग्य होकर चलना ताकि सब लोग प्रसन्न हों, हर अच्छे काम में फल लाएँ, परमेश्वर के ज्ञान में बढ़ते जाएँ, मज़बूत होते जाएँ, धन्यवाद देते रहें, इत्यादि। तो कुलुस्सियों में और भी बहुत कुछ है जिसके बारे में बात की जानी है।

मैंने कुलुस्सियों पर विशेष रूप से एक पाठ्यक्रम पढ़ाया। मैंने इस पर बहुत काम किया। लेकिन इस समय हम जो बात समझ सकते हैं, वह यह है कि जब पौलुस कुलुस्सियों में उनसे बात करता है, तो वह इस तथ्य के बारे में बात कर रहा है कि वह चाहता है कि वे उस शिक्षा के अनुसार जिन्हें जो उन्हें मिली थी ताकि वे चरित्रवान बन सकें।

अब बस गति के लिए नोट्स पर ध्यान दें। कविता 9 बी में संज्ञानात्मक आयाम में, मैं आपके पृष्ठ को प्राप्त करने का प्रयास कर रहा हूँ ताकि मैं उसी पृष्ठ पर रहूँ। आप पृष्ठ 4 पर हैं, पृष्ठ 4। और यदि आप यहाँ ध्यान देते हैं, तो मुझे बस इसमें से कुछ पढ़ने दें, और आप जानते हैं, इसे आसान और तेज़ बनाएं।

ठीक है। यह भरा हुआ हो सकता है, जिसका हमने अभी उल्लेख किया है। इस रूपक का क्या महत्व है? किसी चीज़ से भरा होना उसका और अधिक पाना नहीं है।

रूपक का अर्थ है कि आप किससे भरे हुए थे। प्रेरितों के काम 9:36 में दोरकास अच्छे कामों से भरी हुई थी। उसके जीवन की विशेषता अच्छे कामों से थी, इन कामों से।

इफिसियों 5:18 में, आत्मा से भरे जाने का अर्थ आत्मा को और अधिक प्राप्त करना नहीं है। इसका अर्थ है आत्मा के गुणों से युक्त होना, जिनका उल्लेख इफिसियों में 5:19 से 21 में किया गया है। इसलिए, किसी चीज़ से भरे जाने का, और कुलुस्सियों 1:9 में भरे जाने का अर्थ है वस्तु की विषय-वस्तु से युक्त होना, अर्थात्, वे चीज़ें जो उन्हें सिखाई गईं और परमेश्वर की आत्मा के अभिषेक ने उन्हें दोषी ठहराया।

वह विषय-वस्तु नहीं थी। जॉन ने विषय-वस्तु दी, और आत्मा ने उन्हें आश्चर्य किया कि विषय-वस्तु सत्य थी। इसका अर्थ किसी चीज़ को प्राप्त करना नहीं है, बल्कि उसके द्वारा चित्रित होना है, जो यह मानता है कि आपके पास पहले से ही वह है, और लेखक उच्च स्तर के प्रदर्शन की इच्छा रखता है।

इसलिए, जब पॉल कहता है कि चरित्रवान बनो, तो वह कह रहा है, सुनो, तुम्हें पहले ही सिखाया जा चुका है। मेरी टीम ने तुम्हें अच्छी तरह से सिखाया है। उस शिक्षा से दूर मत हो जाओ, बल्कि उसके अनुसार चरित्रवान बनो।

अपने जीवन में इसे अपनाएँ। अगला पैराग्राफ। अब, आप उसकी इच्छा के ज्ञान से भर सकते हैं।

यहाँ, भरने के लिए वस्तु प्रदान की गई है। आप उसकी इच्छा के ज्ञान के साथ विशेषता प्राप्त कर सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि अधिक ज्ञान प्राप्त करें।

इसका अर्थ है आपके पास जो ज्ञान है, जो आपको सिखाया गया है, उसके द्वारा परिभाषित होना। यह आपके पास मौजूद ईश्वर के ज्ञान के संबंध में परिपक्वता तक पहुँचने का आह्वान है, एक टीम की तुलना में जहाँ आप उसकी इच्छा जानते हैं, जिसे हमने पहले देखा था। आध्यात्मिकता के बारे में पॉल की शब्दावली वही रूढ़िवादिता है जिसका वह यहाँ उपयोग कर रहा है।

मैं इसे पॉल की धार्मिक भाषा कहता हूँ, और अगर आप रूपक को नहीं समझते हैं, तो आप पूरी बात को भूल जाते हैं, और आप अपने खुद के धर्मशास्त्र बनाते हैं। पॉल कभी भी अपने श्रोताओं को किसी तरह के आनंद और आनन्द के अनुभव के लिए नहीं बुलाता है, जो कि अवर्णनीय रूप से दुर्भावनापूर्ण क्षेत्र है। वह कभी भी अपने श्रोताओं को उस तरह के अनुभव के लिए नहीं बुलाता है।

वह हमेशा पिता तक पहुँचने का मार्ग बताता है। हालाँकि, हम अक्सर संदर्भ से उनके भाषण का अनुमान लगाते हैं और अपने स्वयं के धार्मिक विचार के साथ कुछ ऐसा बना लेते हैं जो वह कहना नहीं चाहते थे कि भगवान मुझे कुछ बताने जा रहे हैं। नहीं, वह ऐसा नहीं करने जा रहे हैं।

उसने तुम्हें कुछ बताया है। उसे तुम्हें कुछ बताने की ज़रूरत नहीं है। तुम्हारी ज़िम्मेदारी है कि जो उसने तुम्हें बताया है, उसे समझो।

खैर, यहाँ और भी बहुत कुछ है। मैं यह सब आपको पढ़कर नहीं सुनाऊँगा, लेकिन आप खुद देख सकते हैं। चलिए आपके हैंडआउट के आखिरी पेज पर निष्कर्ष पर चलते हैं।

वास्तव में, हम हैं; यह पृष्ठ चार के नीचे से अंतिम पृष्ठ के अंत तक है। इसका निष्कर्ष यह है कि आध्यात्मिकता के बारे में पॉल की भाषा यह सवाल उठाती है कि क्या पॉल ने आध्यात्मिकता की ज्ञानमीमांसा को प्रकृति में वस्तुनिष्ठ या व्यक्तिपरक के रूप में देखा। जबकि ईश्वर की सच्चाई के प्रति हमारी प्रतिक्रियाओं में निश्चित रूप से एक व्यक्तिपरक पहलू है, मेरा मानना है कि पॉल और अन्य नए नियम के लेखकों की सावधानीपूर्वक व्याख्या से पता चलेगा कि आध्यात्मिकता के मूलभूत पहलू वस्तुनिष्ठ क्षेत्र में हैं।

उदाहरण के लिए, वर्चुअल सलाह सूची वस्तुनिष्ठ है। वे रचनात्मक रचनाएँ हैं। मेरा मतलब है, आप प्रेम या धैर्य की तस्वीर नहीं खींच सकते।

आपको इसका वर्णन करना होगा। वे वर्णनात्मक हैं। और इसलिए, आपको उस दृष्टिकोण से इसमें शामिल होना होगा।

जिस डेटा के द्वारा हम आध्यात्मिकता को परिभाषित करते हैं वह प्रस्तावात्मक सत्य है। बाइबल में आध्यात्मिकता का कार्य वस्तुनिष्ठ रूप से सत्यापित किया जा सकता है। कुछ ग्रंथ हैं।

जानने का आह्वान, भरे जाने का आह्वान, रहस्यमय ज्ञान या अधिक ज्ञान प्राप्त करने का आह्वान नहीं है, बल्कि रहस्योद्घाटन डेटाबेस को शामिल करने का आह्वान है, जो पहले से ही दिया गया है। उन्हें सिखाया गया था। उनके पास पॉल द्वारा लिखी गई कुछ चीजों या यहां तक कि अन्य चीजों की एक प्रति हो सकती है।

और यही वह था जिसके अनुसार उन्हें जीना था। वे इन शिक्षकों पर निर्भर थे। ओह, आप जानते हैं, नए नियम में भविष्यवक्ता का उपहार है।

और कुछ लोग कहते हैं, और मुझे लगता है कि वे सही रास्ते पर हैं, कि आपके पास प्रेरित हैं, जिनकी संख्या सीमित थी, लेकिन पैगंबर एक प्रेरित उपदेशक थे, ऐसा कहा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, पैगंबर को ईश्वर द्वारा निर्देशित किया गया था ताकि वह प्रेरितों द्वारा सिखाई गई बातों को सही ढंग से बता सकें। और इसलिए, उनकी संख्या अधिक थी, जैसा कि यह था।

और वे उन समुदायों में अधिकारपूर्वक वही सिखा रहे थे जो उन्हें प्रेरितों से सिखाया गया था। ठीक है। खैर, मेरे दिमाग में बहुत कुछ घूम रहा है, जिसमें बहुत सी बातें हैं जिन पर हम यहाँ नज़र डाल सकते हैं।

लेकिन सच्चाई यह है कि आत्मा की भूमिका दृढ़ विश्वास की भूमिका है, विषय-वस्तु का संचार नहीं। और मुझे लगता है कि हमने जो पाठ देखा है और खोला है, वह इस बात को साबित करता है। अब आखिरी पृष्ठ।

आत्मा की भूमिका विश्वासी को आंतरिक रूप से मार्गदर्शन करना है। यदि हम इन सभी पाठों को एक साथ लेते हैं, तो मुझे आशा है कि आप उनका अध्ययन करना जारी रखेंगे, इसलिए उनका गहन अध्ययन करें। इस डोमेन में पाठ की समीक्षा से पता चलता है कि आत्मा का काम हमें वचन के संबंध में दोषी ठहराना है।

संदर्भ में आमतौर पर बाइबिल के निर्देशों की उपस्थिति का संकेत मिलता है, जिससे आत्मा संबंधित है और उसे दोषी ठहराता है। आत्मा एक स्वतंत्र भूमिका नहीं निभाता है, बल्कि विश्वासियों को वचन और आज्ञाकारिता की उनकी ज़रूरत के बारे में दोषी ठहराता है, ठीक वैसे ही जैसे वह पापियों को मसीह की ज़रूरत के बारे में दोषी ठहराता है। 1 कुरिन्थियों 2 यह स्पष्ट करता है कि आत्मा ने वचन के उत्पादन को सुनिश्चित करने के लिए प्रेरितों में काम किया और विश्वासियों को जानने और आज्ञा मानने की उनकी ज़रूरत के बारे में दोषी ठहराया।

आत्मा का कार्य आत्मा धर्मशास्त्र की गवाही द्वारा परिभाषित मापदंडों के भीतर है। आत्मा वचन के संबंध में दोषी ठहराती है। और यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उस वचन को समझें और आत्मा को, जैसा कि वह था, काम करने के लिए कुछ दें।

अब, मैं जानता हूँ कि यह एक ऐसा क्षेत्र है जो एक दिशा या दूसरी दिशा में अधिकांश धार्मिक परंपराओं के लिए पवित्र है। और मुझे उम्मीद है कि मैंने आपको आत्मा की भूमिका के बारे में सोचना शुरू करने के लिए प्रेरित किया है। मैंने आपके लिए जो चीजें उद्धृत की हैं, उन्हें पढ़ें। अन्य चीजें भी पढ़ें।

आपको खुद ही इस पर विचार करना होगा। आपको इन मुद्दों पर चम्मच से नहीं खिलाया जा सकता। लेकिन मैं यह कहना चाहूँगा कि मेरे काम और जिन चीज़ों के बारे में मैंने सोचा है, उसके बाद मैं व्यक्तिगत रूप से आश्वस्त हूँ कि आत्मा हमें वचन के बारे में आश्वस्त करती है।

हमारे पास एक प्रेरित बाइबल है। हमारे पास प्रेरित व्याख्याकार नहीं हैं, लेकिन हमारे पास एक ऐसा व्याख्याकार है जो हमें परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए प्रेरित करता है। और हम

अपने जीवन के बाकी हिस्से को पवित्रशास्त्र में स्पष्ट और स्पष्ट बातों की गवाही देते हुए बिता सकते हैं।

हम अपना जीवन वहीं जी सकते हैं। और फिर भी, मुझे लगता है कि यह परमेश्वर की महिमा के लिए है कि हम अधिक कठिन चीजों का पीछा करें। जैसा कि पतरस ने भी कहा, पौलुस कुछ ऐसी बातें लिखता है जिन्हें समझना कठिन है।

तो, भगवान आपको आशीर्वाद दें। हमारा अगला व्याख्यान ईश्वरीय कृपा के प्रश्न पर होगा। और यह इस व्याख्यान से संक्षिप्त होगा।

यह थोड़ा लंबा चला। तो, आपका दिन शुभ हो।